हमारी शक्ति स्वरूपा

इंफ्रा निर्माण की टास्क मास्टर अश्विनी

देश की पहली 'इंफ्रा वूमन' के कंधों पर फिलहाल है 50 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट्स की जिम्मेदारी

■ **आनंद मिश्र @नवभारत,** बस चंद महीने ही बचे हैं, जब मुंबई को पहली अंडर ग्राउन्ड मेट्रो और कोस्टल रोड मिल जाएगा. अन्डर ग्राउन्ड मेट्रो (3) की बात करें तो जब 33.5 किमी लंबे टनल में मेट्रो दौड़ना शुरू करेगी तो रोजाना 6.5 लाख से ज्यादा वाहन मुंबई की सड़कों से गायब हो जाएंगे. इससे पर्यावरण की बचत तो होगी ही, साथ ही प्रति दिन 200 लाख लीटर से अधिक डीजल और पेट्रोल की भी बचत होगी. लोकल ट्रेनों की रेलमपेल से मुक्ति मिलेगी, सो अलग. यही हाल कोस्टल रोड का भी है. शहर के ये दोनों प्रोजेक्ट जब आपरेशनल होंगे तो मुंबई में सफर करने के मायने बदल जाएंगे. इन दोनों शानदार और बहुप्रतीक्षित इंफ्रा प्रोजेक्ट्स का काम पूरी जिम्मेदारी के साथ निभा रही हैं अश्विनी भिड़े. वह 1995 बैच की महाराष्ट्र कैडर की एक प्रतिभाशाली और जिम्मेदार आईएएस अधिकारी हैं, जिन्हें मौजूदा दौर का सबसे मेहनती, कुशल, ईमानदार और सबसे निडर अधिकारियों में जाना जाता है. यही वजह है कि आज उनकी सोशल मीडिया पर बड़ी फैन फालोइंग है. आरे कारशेड के लिए उनके समर्थन के कारण उन्हें 2020 में मुंबई मेट्रोरेल कॉरपोरेशन के एमडी पद से हटा दिया गया था. इसका असर जब प्रोजेक्ट की टाइमलाइन पर पड़ा तो महाराष्ट्र सरकार को फिर उन्हें दोबारा उसी पोस्ट पर लाना पड़ा और जब से वो दुबारा आईं हैं, तब से मेट्रो के साथ-साथ कोस्टल रोड का काम भी तेजी से आगे बढ़ा है. इससे मुंबईकरों को किसी भी कोने में यात्रा करने में लास्ट माइल कनेक्टिविटी मिलेगी.

मेट्रो वूमन नहीं, 'इंफ्रा वूमन' कहिए

- अश्विनी भिड़े सिर्फ महाराष्ट्र ही नहीं, बल्कि पूरे देश की इकलौती वुमन ऐड्मिनिस्ट्रेटर हैं, जिनके जॉब प्रोफाइल में न सिर्फ मेट्रो, बल्कि मोनोरेल, एलिवेटेड रोड, फ्लाईओवर जैसे न जाने कितने मेगा प्रोजेक्ट्स दर्ज हैं.
- इसलिए जब उन्हें 'मेट्रो वूमन' के नाम से नवाजा जाता है तो यह उनके साथ कुछ नाइंसाफी जैसा लगता है. ऐसा इसलिए कि मेट्रो तो इंफ्रास्ट्रक्चर का एक छोटा सा हिस्सा है.
- उनके पास इंफ्रा प्रोजेक्ट्स को हैन्डल करने का दो दशक से ज्यादा अनुभव है और आज की तारीख में वह देश की इकलौती आईएएस अधिकारी हैं, जो इतने बड़े पैमाने पर प्रोजेक्ट एक्जिक्यूशन का काम कर रही हैं.
- यही नहीं, उन्होंने अपने 28 साल के करियर में महाराष्ट्र के इचलकरंजी, सांगली, कोल्हापुर, नागपुर, सिंधुदुर्ग में जहां-जहां उनकी नियुक्ति हुई है, उन्होंने बड़े पैमाने पर काम किया है.
- उन्होंने वनराई संस्था की मदद से कम लागत पर छोटे-छोटे सिंचाई बांध बनवाए, जो आज भी प्रसिद्ध हैं. यही वजह है कि उनके इस 'रिच प्रोफाइल' को देखते हुए उन्हें अब 'इंफ्रा-वूमन' का नाम दिया जा रहा है.

मुश्किलों से निपटना आता है

मुंबई जैसे शहर में जहां एक-एक इंच जगह की कीमत होती है, वहां अन्डरग्राउन्ड मेट्रो का विशालकाय प्रोजेक्ट बनाना कितना दुश्वारी भरा होगा, इसे आसानी से समझा जा सकता है. 'नवभारत' से एक बातचीत में उन्होंने समझाया कि कैसे इस प्रोजेक्ट को जमीन की जरूरत, पर्यावरण मंजूरी, परियोजना से प्रभावित लोगों के पुनर्वसन की समस्या आई और उन्हें एक-एक कैसे करके दूर किया गया. पर उन्हें जो सबसे बड़ी चुनौती झेलनी पड़ी, वह थी आरे में बनाए जा रहे कारशेड का पर्यावरण प्रेमियों का विरोध, जिसकी गूंज आज भी अदालतों में सुनाई पड़ती है. वह कहती हैं, हमारे प्रोजेक्ट के पक्ष में कोर्ट ने भी हमेशा फैसला सुनाया और उसी के आधार पर हम आगे बढ़ रहे हैं, फिर भी लगातार कोर्ट में केस दायर कर इसमें रुकावट डालने की कोशिश की जा रही है. यह कल भी हमारा सबसे बड़ा चैलेंज था और आज भी है. पर हम कामयाब जरूर होंगे.

शानदार ट्रैक रिकॉर्ड

अश्विनी भिड़े, मुंबई मेट्रोरेल कॉरपोरेशन की एमडी के अलावा बीएमसी की अडिशनल म्यूनिसिपल कमिश्नर भी हैं, जहां से वह कोस्टल रोड का कामकाज देख रही हैं. इसके पहले वह कोल्हापुर जिले का सहायक कलेक्टर, सिंधुदुर्ग जिले और नागपुर जिला परिषद का सीईओ, MMRDA में अतिरिक्त महानगर आयुक्त जैसे पदों पर काम कर अपनी छाप छोड़ चुकी हैं. इंफ्रा प्रोजेक्ट्स को हैन्डल करने की उनकी शुरुआत MMRDA के कार्यकाल के दौरान हुई जहां उन्होंने देश के सबसे बड़े फ्लाइओवर ईस्टर्न फ्रीवे, सहार एलिवेटेड रोड, मीठी नदी की सफाई सहित कई बड़ी परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया. मोनोरेल और मुंबई मेट्रो प्रोजेक्ट्स के लिए शहर भर में 5,000 लोगों के पुनर्वास में उनके उत्कृष्ट काम को एक केस स्टडी माना गया है.